International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2018; Page No. 18-22

हिन्दी लघुकथा : आकारगत विमर्श

खेमकरण
शोधछात्र, द्वारा डॉ0 सावित्री मठपाल, हिन्दी विभाग, सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर, जिला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड, भारत।

सारांश
हिन्दी लघुकथा हेतु बीसवीं सदी का आठवाँ दशक महत्वपूर्ण है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में सामाजिक, साँस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक आदि क्षेत्रों में कई आन्तरिक विक्षोभ उत्पन्न उत्पन्न हुए। परिणाम स्वरूप लघुकथा, पूर्णरूपेण अपने रूप–रंग में ऐतिहासिक परिवर्तन करते हुए कहानी, उपन्यास की तरह सामाजिक दायित्व निभाने लगी। जैन–कथा, बोध–कथा, नैतिक कथा, प्रेरक कथा, पंचतन्त्र की कथा, वेद, पुराण, उपनिषद की कथा, लघु व्यंग्य कथा अथवा लघुआकारीय धार्मिक कथा का चोला त्यागकर पूर्णतः यथार्थवादी आधुनिक विधा बन गई। फलस्वरूप आधुनिक लघुकथाओं में मानवीय चेतना, संवेदना और सामाजिक जीवन–मूल्यों का चित्रण सार्थक रूप में हुआ। अतीत से वर्तमान तक, इन पाँच दशकों का सफर, निस्संदेह लघुकथा के लिए उपलब्धिपूर्ण है। इन दशकों में अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर हिन्दी लघुकथा ने आशातीत प्रगति की है। आठवें दशक तक कहानी, उपन्यास आदि विधाएँ मजबूत स्थिति में थीं। लघुकथा को यह स्थिति इक्कीसवीं सदी में प्राप्त हुई है। इस सदी में मधुमती, नई धारा, संरचना, शोध दिशा, पुश्पगंधा, अविराम साहित्यिकी, अभिनव इमरोज, सृज्यमान, सरस्वती सुमन, हिन्दी चेतना, साहित्य अमृत और सादर इण्डिया आदि विभिन्न पत्रिकाओं ने लघुकथा विशेशांक प्रकाशित कर लघुकथा को सशक्त किया, वहीं दर्जनों ब्लॉग, नेट पत्रिकाओं ने इसे वैश्विक स्थान प्रदान किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र, लघुकथा के आकार प्रकार, विकास, स्थापना, स्वीकृति इत्यादि पर गुणात्मक–आलोचनात्मक रूप में प्रस्तुत है।

मूल शब्दः लघुकथा, विमर्श, आकार, समकालीन

प्रस्तावना
साहित्य, समाज का जीवन्त स्वर है। मानव समाज साहित्य द्वारा, विभिन्न प्रकार की अपनी संस्कृति–सभ्यता सहेजता हैं, वहीं, इसे खोकर बहुत कुछ नश्ट भी करता है। तात्पर्य है कि साहित्य, समाज को वैज्ञानिक मजबूती प्रदान करने का ठोस कार्य करता है। लेखक परिवर्तनशील, प्रगतिशील, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को रेखांकित करते हैं और पाठक, सहृदय एवं अनुग्राही, इन जीवन मूल्यों को ग्रहणकर समाज में संतुलन स्थापित। इन अन्तर्सम्बन्धों के कारण साहित्य, सदियों पूर्व से समाज–समुदाय के अभिन्न अंग के रूप में अधिश्ठापित है। साहित्य के महत्व के सम्बन्ध में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का कथन हैं, ''तिमिर है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं, मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं!''[1] अतः किसी व्यक्ति का किसी देश, समाज में जन्म लेना और एक दिवस मृत्यु को प्राप्त हो जाना ही संतोशजनक, तृप्तिदायक–साहित्यिक कार्य नहीं बल्कि अपने जन्म और मरण के अन्तराल में अपनी ओर से इस समाज, इस दुनिया में कुछ जोड़ना ही वास्तव में साहित्यिक कार्य है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध कवि–कथाकार और तारसप्तक के संपादक डॉ0 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के शब्द हैं कि, ''जीवन से जो मिलता है उसको दूसरों तक पहुँचाना साहित्यिक कर्म है। जो दूसरों तक पहुँचाता नहीं, अपने को अभिव्यक्त करता है, मैं उसको साहित्य नहीं मानता। दूसरा नहीं है तो साहित्य नहीं है। साहित्य में दूसरों तक पहुँचने की तड़पन होनी चाहिए।''[2]

निस्संदेह हिन्दी साहित्य में दूसरों तक पहुँचने की तड़पन है। बीसवीं हिन्दी साहित्य के लिए आधुनिक बदलाव की सदी सहित, साहित्य की बहुत सी विधाओं की जननी रही है। इनमें एक विधा लघुकथा भी है। बीसवीं सदी और अब इक्कीसवीं सदी, तात्पर्य है दोनों सदियों में लेखकों की शानदार पीढ़ी, एक ओर कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, और आलोचना विधा को मजबूत करने में लगी रही, वहीं दूसरी ओर लेखकों की एक पीढ़ी, व्यापक स्तर पर लघुकथा को भी समृद्ध करती रही है। मधुमती, नई धारा, संरचना, शोध दिशा, पुश्पगंधा, अविराम साहित्यिकी, अभिनव इमरोज, सृज्यमान, सरस्वती सुमन, हिन्दी चेतना, साहित्य अमृत और सादर इण्डिया आदि पत्रिकाओं के लघुकथा विषेशांकों का प्रकाशन सहित कथाक्रम, हंस, परिंदे, तद्भव, पाखी, अक्सर, साहित्य अमृत, अमर उजाला, दैनिक जागरण, प्रेरणा–अंशु, नवल, आधारशिला आदि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, सहित दर्जनों ब्लॉग और नेट पत्रिकाओं यथा लघुकथा वार्ता, लघुकथा. कॉम, जनकृति अन्तरराष्ट्रीय पत्रिका, सेतु, अविराम साहित्यिकी, हिन्दी चेतना आदि में प्रकाशन की दृष्टि से यह सदी लघुकथा हेतु स्वर्ण युग है। स्वर्ण युग कहना इसलिए औचित्यपूर्ण होगा कि वर्तमान, लघुकथा का विकास, उसकी परिव्यापक स्थिति, इससे पूर्व नहीं थी। यद्यपि वरिष्ठ हस्ताक्षर सुकेश साहनी, लघुकथा लेखन की दृष्टि से 1987 से 2000 की अवधि को स्वर्णकाल की संज्ञा के पक्ष में है। वर्तमान में स्थिति पूर्णतः परिवर्तित है।[3] वर्तमान में तो दर्जनों फेसबुक पेज, फेसबुक ग्रुप, ब्लॉग और नेट पत्रिकाओं के कारण इसकी वर्तमान वैश्विक पैठ से सब परिचित हैं। यद्यपि मुख्यधारा के लेखक मुख्य रूप से इस विधा पर लिखना और आलोचनात्मक कार्य करना उचित नहीं समझते। इसका कारण कुछ भी हो? तथापि यह उदासीनता भी, कारण है कि लघुकथा वैश्विक पहुँच के उपरान्त भी हिन्दी साहित्य की मुख्य विधाओं के समान, सम्मानजनक स्थान बना नहीं पाई है। प्रकाशन की दृष्टि से लघुकथा, सम्मानजनक स्थिति में है। वह हाशिए पर भी नहीं है। बहुत अधिक फिलर रूपी धुन्ध की सीमा रेखा भी, पार कर समकालीन हिन्दी लघुकथा, वर्तमान में

प्रकाशन–क्रम में सबसे ऊपर है। यह कहना भी उचित होगा कि मुख्यधारा लेखकीय दृष्टि द्वारा भी स्तरीय एवं विस्मरणीय लघुकथाएँ हिन्दी साहित्य पटल पर आई हैं, परन्तु लघुकथा के विकास के लिए कार्य की जो तीव्रता बलराम जी में है, वही तीव्रताद मधुदीप जी में भी दिखती है। इस उपलब्धि के उपरान्त भी, विशेषकर महाविद्यालय/विश्वविद्यालयों में इसकी मान्यता अभी नगण्य है। अतः इस विधा में कम ही शोधकार्य दृष्टिगोचर हुए हैं। शैक्षणिक–संस्थानिक स्तर पर विगत चार–पाँच वर्शों से कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल (उत्तराखण्ड) द्वारा स्नातक प्रथम वर्ष, हिन्दी साहित्य, के द्वितीय प्रश्नप्रत्र में लघुकथा की अवधारणा सम्बन्धित प्रश्न अवश्य पूछे जाते रहे हैं। अधिकांश पाठक लघुकथा को छोटी कहानी का नाम देते हैं।

लघुकथा

पत्र–पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित होने के उपरान्त भी छात्र–समुदाय, शिक्षकों द्वारा यह जिज्ञासा उत्पन्न होती रही है कि लघुकथा क्या है? यद्यपि लघुकथा से निकटता के उपरान्त इस प्रश्न का उत्तर भी मिल जाता है। तथापि प्राथमिक समझ के लिए यही कहा जा सकता है कि लघुकथा, लघु एवं कथा, दो शब्दों का समुच्चय है। लघुकथा, को अंग्रेजी में लघु अर्थात शॉर्ट और कथा अर्थात स्टोरी, यानी शॉर्ट स्टोरी के रूप में भी परिभाषित करते रहे हैं! शॉर्ट स्टोरी, हिन्दी कहानी का अंग्रेजी पर्याय भी है। अतः बहुधा, पाठक, सहृदय लघुकथा का अंग्रेजी नामकरण शॉर्ट स्टोरी कर देते हैं परन्तु शॉर्ट स्टोरी का जब हिन्दी नामकरण करते हैं तो लघुकथा नहीं करते अपितु कहानी अथवा लघुकहानी पर आकर ठहर जाते हैं! यद्यपि लघुकथा के विकास–क्रम के अध्ययन के आलोक में यह कहना उचित ही है कि लघुकथा के लिए एक ही समय में भिन्न–भिन्न नामों का उल्लेख होता रहा है। तात्पर्य है कि भारत अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी लघुकथा के कई नाम हैं, जिन पर आगे चर्चा होगी। कालजयी साहित्यकार विलियम शैक्सपियर के शब्दों में, कि नाम में क्या रखा है! वहीं महाकवि तुलसीदास के शब्द भी स्मरण हो आते हैं कि नाम में बहुत कुछ रखा हैं। दोनों साहित्यकारों की बातों की प्रासंगिकता समय पर निर्भर है तथापि अनेक नाम से सम्बोधित होने की अपेक्षा लघुकथा मात्र एक ही नाम से सम्बोधित हो, यह प्रश्न भी हिन्दी साहित्य में कई सदियों से अपना उत्तर खोजता रहा है। और उत्तर मिल भी गया है ताकि नई पीढ़ी भविष्य में भ्रम की स्थिति में न रहे! विशेषकर लघुकथा क्या है? के प्रश्न पर। अतः सर्वप्रथम वरिष्ठ लघुकथाकार मधुदीप की लघुकथा सम्बन्धी कथन पर विचार करना समीचीन होगा। वे कहते हैं, ''लघु में विराट को प्रस्तुत करना ही लघुकथाकार का कौशल होता है। सृष्टि में पृथ्वी, पृथ्वी पर मनुष्य, मनुष्य का पूरा जीवन और उस जीवन का एक पल। विस्तृत से अणु की ओर यात्रा है यह पल और उस पल का सही–सटीक चित्रण ही लघुकथा का अभीष्ट है। उसे ही सफल लघुकथाकार माना जा सकता है जो उस पल को पूरी शिद्दत से पकड़कर उसे उसकी पूरी संवेदना के साथ पाठकों को सम्प्रेषित कर सके।''[4]

मधुदीप का 'लघु' शब्द से आशय स्पष्टतः लघुकथा के आकार–प्रकार, बनावट एवं संरचना से है। लघुकथा की यह बड़ी विषेशता है कि लघुकथा अपने लघु आकार में विराट को चिह्नित करती है। यह सब कुछ पूर्णतः लघुकथाकारों की कौशल क्षमता पर निर्भर होती है। समीक्षक बलराम अग्रवाल भी निरंतर इस ओर संकेत करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त ध्यान देने योग्य बिन्दु यह भी है कि समाज के सार्थक बिम्बों का उभार ही लघुकथा की संवेदना है। लघुकथा की एक अन्य परिभाषा में वरिष्ठ साहित्यकार हरिशंकर परसाई कहते हैं ''लघुकथा कथात्मक अभिव्यक्ति का लघुतम रूप है।''[5]

परसाई जी की परिभाषा से स्पष्ट होता है कि कथात्मक अभिव्यक्ति का सबसे लघु रूप का नाम लघुकथा है! अर्थात क्रमबद्ध रूप में गल्प के इस लघु आयाम के उपरांत ही कहानी और उपन्यास का क्रम आएगा। हिन्दी साहित्य में लघुकथा के लिए कुछ अंग्रेजी नाम आए हैं जैसे : स्टोरिएट,[6] स्मॉल स्टोरी,[7] माइक्रो स्टोरी,[8] शॉर्ट स्टोरी और अब लघुकथा। वरिष्ठ लघुकथाकार बलराम अग्रवाल जी के अनुसार भारत सहित अन्तराष्ट्रीय बाजार में लघुकथा, मात्र लघुकथा नहीं अपितु आषुकथा (Sudden Fiction), अणुकथा (Micro Fiction or Micro Story), पोस्टकार्ड कथा (Postcard Fiction), हथेलीकथा या पामस्टोरी (Palm Story), छोटी कहानी अथवा लघु कहानी (Short short Story), तथा कौंधकथा (Flash Fiction) आदि के रूप में भी प्रसिद्ध है। तथापि लघुकथा के लिए प्रयुक्त उपरोक्त नामों के अतिरिक्त वर्तमान में लघुकथा के लिए अंग्रेजी नाम लघुकथा (Laghukatha) का प्रयोग स्वीकार्य है। अर्थात हिन्दी साहित्य में यह धारा प्रवाहित हुई है कि लघुकथा को अंग्रेजी में लघुकथा ही कहा जाए। इस सन्दर्भ में यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि कैम्बिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड द्वारा इरा वलेरिया सरमा (Ira Valeria Sarma) को The Laghukatha a historical and literary analysis of a modern hindi prose genre विशय पर शोधकार्य करने के उपरान्त सहर्ष पी–एच0 डी0 की उपाधि प्रदान की। अपने शोध में इरा वलेरिया सरमा ने लघुकथा को अंग्रेजी में लघुकथा (Laghukatha) लिखा है।[9] अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित हुए बिना, हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य में लघुकथा को लघुकथा नाम से जानने, की पहल, इस विधा की बड़ी उपलब्धि है। उपलब्धि इस रूप में कि लघुकथा, यदि भिन्न–भिन्न नामों से लिखा, पढ़ा और बोला जाए तो लघुकथा की नींव तक पहुँचने में कुछ वक्त अवश्य लग सकता है। दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली से वरिष्ठ लेखक मधुदीप के संपादन में पड़ाव और पड़ताल, खण्ड–26 में स्मॉल स्टोरी की अपेक्षा अंग्रेजी में लघुकथा शब्द का प्रयोग हुआ है। अस्तु...लघुकथा इस बहस से मुक्त हुई। तथापि इस विचार का विस्तार, आवश्यक है।

लघुकथा का आकार

लघुकथा, बीसवीं सदी के आठवें दशक में अपना रूप परिवर्तन कर लघुकथा आधुनिक लघुकथा बन गई। अब यह नई विधा, जैन–कथा, बोध–कथा, नैतिक कथा, प्रेरक कथा, पंचतन्त्र की कथा, वेद, पुराण, उपनिषद की कथा, लघु व्यंग्य कथा, लोककथा अथवा लघुआकारीय धार्मिक कथा से नितान्त भिन्न, कहानी तथा उपन्यास की तरह गल्प का एक आयाम है। सामान्यतः गल्प शब्द का सम्बन्ध वास्तविक जीवन से न मानकर डींग, गप्प, मौजमस्ती या मनोरंजन से माना जाता है, परन्तु इस शब्द का अर्थ भावपूर्ण व विचार–प्रधान किसी कथा से भी है। इस शब्द का प्रयोग जब उपन्यास, कहानी और लघुकथा के सन्दर्भ में किया जाए तो इसका अर्थ सामाजिक यथार्थ व वास्तविक जीवन से जुड़ जाता है। आखिर, कुछ भी लिखा हुआ किसी विधा के अन्तर्गत तभी आ सकता है जब उसमें अपना समय, यथार्थ और सामाजिक संवेदना हो तथा उसे कौतूहल द्वारा चरम बिन्दु और संतोषजनक अन्त तक ले जाया जाए।

लघुकथा, कहानी और उपन्यास पर क्रमानुसार विचार करने पर जैसा कि पूर्व में बताया गया है लघुकथा, आकार के दृष्टिकोण से बहुत छोटी है अर्थात् सामाजिक अनुभवों पर, मुद्दों का सकारात्मक विश्लेषण करते हुए कम से कम शब्दों में कहने की कौशल–पूर्ण विधा। लघुकथा का प्राण उसकी लघुता है। कहानी, उससे बड़ी

विधा है। यह समय, समाज और मनुष्य जीवन के दो, तीन, चार अथवा पाँच बिम्बों को हमारे सामने रखती है। वहीं उपन्यास, कहानी एवं लघुकथा से भिन्न एक महत्वपूर्ण विधा है। इसमें एक, दो या तीन बिम्ब नहीं बल्कि सैकड़ों बिम्ब हो सकते हैं, इसलिए इसे सामाजिक ताना–बाना, यथार्थ का महाआख्यान व महाकाव्य कहा जाता है। यही कारण है कि भारतेन्दु युग से लेकर अब तब किसी भी साहित्यिक विधा की तुलना में उपन्यास रचनात्मक रूप से अधिक समाजबद्ध और समय सापेक्ष रहा और अपनी आधारभूत संरचना के कारण सामाजिक यथार्थ और ऐतिहासिक स्थितियों को सूक्ष्म रूप से पकड़ता रहा है। इस प्रकार लघुकथा, कहानी और उपन्यास तीनों विधाओं तुलनात्मक आकार–प्रकार, रूप–रंग, रचना तन्त्र एवं अन्तर्वस्तु भिन्न–भिन्न है। उपन्यास में विस्तार, बारीकी और विवरणों की त्रयी होती है। यह त्रयी, कहानी में भी हो सकती है। लघुकथा में बारीकी अर्थात सूक्ष्मता तो हो सकती है परन्तु विस्तार और विवरण की कोई जगह इसमें नहीं है। यही वह प्रस्थान बिन्दु है जब लघुकथा सृजन के लिए लघुकथाकारों को विषेश योग्यता अथवा अभ्यास की आवश्यकता होती है। लघुकथा का स्वाभाविक विस्तार एक–दो पृष्ठीय हो सकता है परन्तु इतना नहीं कि कहानी की सीमा पार कर जाए। लघुकथा, अपनी और कहानी की सीमा–क्षेत्र से परिचित है। एक विधा के रूप में वह अपनी कार्य विधि जानती है। ठीक इसी प्रकार कहानी का स्वाभाविक विस्तार किसी भी मोड़ तक हो सकता है परन्तु इतना नहीं कि वह उपन्यास की सीमा अतिक्रमण कर जाए। कहने का अर्थ है विधाओं को भी, कि कहाँ तक जाना है और नहीं, अर्थात अपने स्वाभाविक वृद्धि अथवा सीमा–क्षेत्र का संज्ञान होता है। सीमा–क्षेत्र का अतिक्रमण विधा, को अविधा बनाती है।

यद्यपि लघुकथा के आकार को लेकर लघुकथाकारों में मतभेद रहा है। तथापि इतना अवश्य है कि यह दूसरी विधाओं की अपेक्षा आकारगत कुछ विभिन्नता रखती है। आाकारगत कुछ विभिन्नताओं का होना, किसी भी विधा का स्व अस्तित्व है। कथाकुल की विधा होने के कारण लघुकथा, कहानी और उपन्यास को आकार की दृष्टि से प्रस्तुत चित्र–रेखा द्वारा समझा जा सकता है।

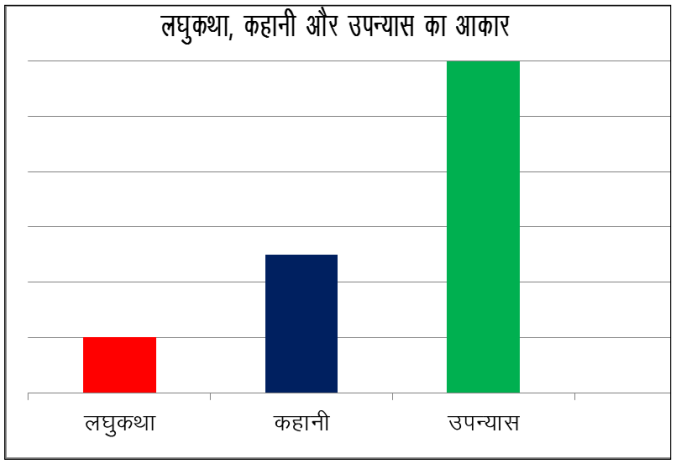

आकृति–1

उपरोक्त चित्र–रेखा द्वारा विधा स्तर पर लाल रंग लघुकथा, नीला रंग कहानी और हरा रंग उपन्यास का प्रतीक मानकर, उनके आकारों को समझाने का प्रयास मात्र है। आकार से तात्पर्य विधाओं की संरचना है। इसका शाब्दिक अर्थ है– आकृति, आकार, स्वरूप, रूप, शकल, शक्ल, बनावट, कलेवर, ढाँचा, संरचना, अर्थात किसी वस्तु की वे बाहरी और दृष्य बातें जिनसे उसकी यह लम्बाई, चौड़ाई, प्रकार और स्वरूप का ज्ञान होता है।[10] कहने का अर्थ है कि चित्र–रेखा को अन्तर की दृष्टि से अवलोकन किया जाए।

अनेक बार, लेखक एवं पाठक लघुकथा की रचना प्रक्रिया, उसकी अवधारणा से परिचित होते हैं परन्तु अन्य पाठक–जिज्ञासुओं को समझाने में सफल नहीं हो पाते कि लघुकथा क्या है ? लघुकथा अथवा लघुकथा का शास्त्र, सिद्धांत क्या है? साहित्य में इसका विधागत अस्तित्व क्या है? लेखक, इन बिन्दुओं पर ठहर कर इसकी शब्द सीमा तय करने में या ढाई–तीन पृष्ठीय रचना ही लघुकथा है! मात्र इसी पर बल देते हैं अथवा इन्हीं बिन्दुओं में उलझकर लघुकथा के विधागत अस्तित्व को समझने–समझाने का प्रयास करते हैं जबकि यही समय होता है जहाँ लघुकथा की पृष्ठीय विस्तार और शब्द सीमा दोनों स्तरों पर मर्यादित, अनुशासित एवं सावधान रहने की आवश्यकता होती है। सावधान इस रूप में कि इसका कहन क्या है? इसका प्रयोजन क्या है? परन्तु इसके विपरीत लघुकथाकार, शीघ्रता से सर्वप्रथम लघुकथा की शब्द–सीमा निर्धारण करने में लग जाते हैं कि 500 से 700 शब्दों की रचना लघुकथा है। यद्यपि लघुकथा की विधागत समझ स्पष्ट करने हेतु कई बार विवशतावष भी किया जाता है! तथापि बड़ा प्रश्न यह है कि यदि 500 से 700 शब्दों की रचना लघुकथा है तो 701 एक शब्दों की रचना क्या है? क्या इसे लघुकथा कहना उचित होगा? अतः लेखकों–पाठकों व सहृदयों द्वारा यह समझ रखना बहुत आवश्यक प्रतीत होता है कि किसी विधा की प्राकृतिक सीमा बाधितकर, उसे शब्द–सीमा के अन्तर्गत बाँधना उस विधा के लिए घातक है अथवा नहीं ? क्या ऐसा करना किसी विधा के अस्तित्व पर सवाल उठाने जैसा है? क्या शब्द–सीमा किसी विधा के अस्तित्व के लिए आवश्यक है? या यह सब लिखे जाने वाले विषयगत समस्याओं पर आधारित होता है कि कोई विधा स्वयं कहाँ तक अपना विस्तार करती है ? इस सन्दर्भ में सिद्धहस्त लघुकथाकार सुकेश साहनी का कथन है, ''लघुकथा लेखन कोई यांत्रिक नहीं है, इसलिए इसमें शब्द सीमा तय कर सृजन नहीं किया जा सकता।''[11] अतः इस यांत्रिकता से बचाव बहुत आवश्यक है।

ध्यान देने योग्य है कि किसी विधा का अस्तित्व और उसका विस्तार उसकी स्वाभाविकता पर आधारित है, न कि उसके शब्दों को तय कर शब्द सीमा पर। स्वाभाविकता से आशय है विधा की नैसर्गिकता से। उसके प्राकृतिक उतार–चढ़ाव से यानी अकृत्रिमता की दूरी से। यही सिद्वांत लघुकथा पर भी लागू होता है। लघुकथा की भी अपनी स्वाभाविक गति होती है। यह पूर्वाग्रह से लिखी जाने वाली विधा नहीं है। यदि पूर्वाग्रह छोड़कर स्वाभाविक रूप में कोई लघुकथा लिखी जाए तो वह 500 शब्दों की सीमा के अन्तर्गत ही होगी, क्योंकि लघुकथा, भी दूसरी विधाओं की तरह अपनी शब्द सीमा का निर्धारण स्वयं तय करती है न कि लेखक या लेखक का पूर्वाग्रह। अपने शब्द, अपनी सीमा स्वयं तय करने के कारण ही लघुकथा, लघुकथा है। कविता, कविता है। उपन्यास, उपन्यास है। निबंध, निबंध है। आत्मकथा, आत्मकथा है और संस्मरण, संस्मरण है। क्या किसी उपन्यास को कविता, निबंध, आत्मकथा अथवा लघुकथा कहा जा सकता है? या किसी कविता को उपन्यास कहा जा सकता है? निःसंदेह नहीं...क्योंकि प्रत्येक विधा की अपनी संरचना होती है और उसी से वह पहचानी जाती है। सबकी अपनी स्वाभाविक गति–लय होती हैं। अतः सकारात्मक दृष्टिकोण से चिंतन–मनन करने पर प्रतीत होता है कि शब्द–सीमा तय करने का उदाहरण, हिन्दी साहित्य में एकमात्र इसी विधा के साथ देखने को मिलता है। इस विशय में यह बहस कभी कविता, कहानी और उपन्यास को लेकर शुरू नहीं हुई कि इन तीनों विधाओं की शब्द

सीमा क्या हो ? यह प्रश्न आवश्यक नहीं है परन्तु लघुकथा की स्पष्ट छवि, समझ हेतु अति आवश्यक भी है। लघुकथा की शब्द सीमा के सम्बन्ध में डॉ0 गोपाल राय का कहना है, ''लघुकथा के जो उदाहरण अब तक उपलब्ध हैं, उनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि उनका आकार प्रायः 150 शब्दों से 300 शब्दों के बीच होता है। कदाचित 500 शब्दों तक भी उसकी सीमा जा सकती है।''[12] इसी प्रकार महावीर प्रसाद जैन कहते हैं, ''लघुकथा की शब्द–सीमा पच्चीस से लेकर एक हजार शब्दों तक की हो सकती है।''[13]

डॉ0 गोपाल राय का कथन लघुकथा के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं परन्तु महावीर प्रसाद जैन, लघुकथा की शब्द–सीमा एक हजार शब्दों तक पहुँचाकर भ्रम अथवा विवाद को ही बढ़ावा देते हैं! क्योंकि पाँच सौ अथवा एक हजार, अथवा इससे अधिक शब्दों की लघुकथा लिखने के बाद लघुकथा पर बहुधा यह आरोप भी लगे हैं कि वह, कहानी की सीमा में प्रवेश कर गई है! उदाहरण के रूप में माधवराव सप्रे की लगभग 590 शब्दों की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' पर विचारणीय है। अधिकांश लघुकथा लेखक इसे हिन्दी की पहली लघुकथा स्वीकार करते हैं। साथ ही यह भी चित्ताकर्षक है कि सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य, हिन्दी की प्रथम कहानी की श्रेणी में इसी कहानी को चिह्नित करते हैं। यदि महावीर प्रसाद जैन की लघुकथा सम्बन्धी परिभाशा को केन्द्र में रखकर यह स्वीकार कर लिया जाए कि सप्रे जी की कहानी, अपनी बनावट, संरचना इत्यादि के कारण लघुकथा की बनावट, संरचना में पूर्णतः स्वस्थ बैठती है अतः इस कहानी को हिन्दी की पहली लघुकथा मानने की पहल की जाए तो क्या सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के इतिहास में परिवर्तन करना आवश्यक होगा! क्या यह कार्य संभव है? ध्यातव्य है कि पूर्ववर्ती साहित्यकार–पुरखों द्वारा साहित्य की धरती पर लघुकथा के बीज छिड़कने में महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः इस सन्दर्भ में उनको दोषमुक्त रखना ही, लघुकथा का सम्मान होगा। आठवें दशक की नई पीढ़ी ने लघुकथा को पुर्नस्थापित कर बुलंदियों पर पहुँचाया। यह भार, इक्कीसवीं सदी की नई पीढ़ी पर भी है! अतः इतिहास परिवर्तन का विषय को छोड़कर लघुकथा और कहानी की निकटता एवं दूरियों पर विचार करना उचित होगा।

अब तक, विमर्ष के उपरांत यह माना जाता रहा है कि विधा–विधाओं के बीच कुछ दूरी होनी चाहिए। दूरी इस तरह यथा, दो मकान पूर्णतः साथ–साथ बने और सटे होने के उपरान्त भी उनका अस्तित्व भिन्न–भिन्न होता है। प्रत्येक मकान में रहने वाला परिवार और प्रत्येक परिवार का मकान स्पष्टतः अलग–अलग दिखता है। उनकी इस निकटता के कारण उनको एक नहीं माना जा सकता। अर्थात् उनकी निकटता ही उनकी दूरी है। विधाओं के बीच में यह निकटता अथवा दूरी भी कुछ इसी प्रकार होनी चाहिए। अतः विधागत दूरियों के सम्बन्ध में डॉ0 गोपाल राय का महत्वपूर्ण सुझाव है कि, ''लघुकथा, कहानी, लम्बी कहानी, उपन्यासिका, लघु उपन्यास और उपन्यास के बीच, दूरी इतनी रखी जा सकती है, जिसके बीच ये विधाएँ, आवश्यक होने पर, आवाजाही कर सकें। आकार की दृष्टि से लघुकथा को कहानी के क्षेत्र में, कहानी को लघुकथा और लम्बी कहानी के क्षेत्र में और लम्बी कहानी को कहानी के क्षेत्र में प्रवेश करने की थोड़ी–बहुत छूट होनी चाहिए। यह लघुकथा, कहानी और लम्बी कहानी जैसे पदों के प्रयोग में अराजकता दूर करने का एक काम चलाऊ नुस्खा हो सकता है।''[14]

डॉ0 राय के शब्द विधागत भ्रम को दूर करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। अराजकता एवं आपसी विधागत समस्याओं को दूर करने के लिए आवश्यक है कि विधाओं को क्षेत्र–सम्बन्धी कुछ छूट दी जाए और यह सब भी पाठकों–लेखकों के दृष्टिकोण पर निर्भर हैं। ऐसा होने से विधा को गलत समझने का भ्रम नहीं होगा।

हिन्दी साहित्य में कहानी और उपन्यास की दृष्टि स्पष्ट है परन्तु लघुकथा, की स्पष्ट समझदारी विकसित करते रहने की आवश्यकता अभी है। मात्र लघुकथाकारों द्वारा लघुकथा की विधागत समझ से कुछ नहीं होगा। यद्यपि आम पाठकों तक लघुकथा से सम्बन्धित समझदारी पहुँचाने के प्रयास निरन्तर हो रहे है। परन्तु कम ही लघुकथाकार इसे ऑक्सीजन के रूप में ग्रहण कर रहे हैं। तथापि अल्पसंख्यक लेखक और पाठक ही इस चेतना से लैस हैं कि किसी विषय पर लिखी गई कथा का लघु संस्करण लघुकथा है, मध्यम संस्करण कहानी है और वृहद संस्करण उपन्यास है। संस्करण से तात्पर्य है कि विधागत नया रूप, जिनका कथ्य–तथ्य और भाव सम्बन्धी आपसी कोई सम्बन्ध, किसी अन्य विधा से न हों। यह न हो कि लघुकथा, को ही बढ़ाकर कहानी और कहानी को बढ़ाकर उपन्यास कर दिया जाए। अतः स्पष्ट रूप से यह समझ रखना आवश्यक लगता है कि इन तीनों विधाओं में आकार को लेकर भिन्नता अवष्य है, परन्तु कथा की सहोदरी सम्बन्धी अस्तित्व को लेकर नहीं। अस्तित्व से आशय मात्र इतना है कि लघुकथा का कहानी और उपन्यास की तरह ही सम्पूर्ण कथापरक अस्तित्व है। तीनों विधाएँ अपने स्वभाव–स्वभाविकतानुसार अपनी गति तय करती है अतः कला की दृष्टि से अनेक भिन्नता व समानताओं के होते हुए भी तीनों विधाएँ पूर्णरूप से पूर्ण व स्वतन्त्र हैं। यदि एक ही विषय पर लघुकथा, कहानी और उपन्यास लिखे जाएँ तो प्रत्येक विधा, भाषा–शैली, भावबोध और तेवर में भिन्न–भिन्न होंगी। लेखक की चूक ही किसी विधा के साथ अन्याय करती है। विषेशकर, लघुकथा के साथ अन्याय बहुधा देखने को मिलता है।

उपसंहार

साहित्य का कर्त्तव्य होता है कि शब्दों की मदद से अपने अनुभवों में अर्थगर्भित गहराई लाए। पाठकों को विश्लेषण–संश्लेशण के लिए दृष्टिकोण दें, जिन्दगी के मामूली प्रसंगों के लिए उत्साह एवं जोष भर दें। लघुकथा भी यही कार्य कर रही है परन्तु हिन्दी लघुकथा के साथ भ्रम एवं निवारण भी साथ–साथ चल रहे हैं। एक ही समस्या या भ्रामक दृष्टिकोण लघुकथा की राहों में नहीं है। पहला भ्रामक दृष्टिकोण है लघुकथा का नाम आते ही पूर्वाग्रह युक्त यही समझ उत्पन्न होती है कि लघु–आकार में कुछ भी लिख देना ही लघुकथा है! यद्यपि इस पर ऊपर चर्चा हो चुकी है। इसके अतिरिक्त लघुकथा, अपना नाम लघुकथा की अपेक्षा लघु कथा लिखने से भी आहत है! क्या उपन्यास को उप न्यास लिखा जा सकता है ? इसी प्रकार निबंध को नि बंध, आत्मकथा को आत्म कथा और रेखाचित्र को रेखा चित्र लिखने की छूट दी जा सकती है? कदापि नहीं, अतः लघुकथा को समझने के लिए पहली शर्त यही है कि इसका सही नाम लघुकथा ही लिखा–पढ़ा और समझा जाए। फिर लघुकथा का लघुआकारीय होना या कदकाठी में छोटा होना इसकी एक विषेशता है। इससे उसके कार्य/अस्तित्व पर प्रश्न नहीं उठता? पूरा विश्व जानता है कि इतिहास में नेपोलियन बोनापार्ट जैसे छोटे–कदकाठी का एक व्यक्ति भी हुआ, जिसने यूरोप को अपने चरणों में झुकाया, जिसे सम्पूर्ण विश्व आज भी नमन करता है। एक ग्राम से भी कम वजनी और आकार में बहुत ही छोटे मच्छर, सदियों से मानव–समाज के लिए बड़ी परेशानी का कारण रहे हैं। विज्ञान के चरम युग के चरम पर पहुँचकर भी मानव सभ्यता अभी मच्छरों पर पूर्णतः नियंत्रण नहीं कर पाई है। एक छोटा सा चिप, अपने अन्दर सम्पूर्ण दुनिया समाए रहता है। तात्पर्य है कि किसी वस्तु या विधा का आकार उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना उसका उद्देष्य। लघुकथा के कथ्य, तथ्य, शिल्प, उद्देश्य आदि पर ध्यान न देकर मात्र इसे लघुआकारीय कहना तथा आकार

के कारण इसकी उपेक्षा करना, इस विधा की क्षमता पर शक व इसके साथ अन्याय करना है। एक भ्रम यह भी प्रसारित–प्रचारित किया जाता रहा है कि है कि उपन्यास को लघुरूप में कहानी और कहानी को लघुरूप में लघुकथा बनाकर प्रस्तुत किया जा सकता है। यद्यपि इस भ्रम का निवारण भी समय–समय होता रहा है परन्तु अंगुली कटवाकर शहीदों की सूची में नाम लिखवाने का प्रयास करने वाले लघुकथा लेखकों की कमी नहीं है। ऐसे खिसियाए लेखकों, के कारण ही लघुकथा सम्बन्धी भ्रामक दृष्टिकोण उत्पन्न होते रहते है और सामान्यतः अन्य लेखकों, संपादकों, प्रकाशकों, पाठकों और नवोदित रचनाकारों द्वारा यह समझा जाने लगता है कि मात्र लघु–आकारीय गद्य में कुछ भी लिख देना ही लघुकथा है। इस समस्या के ध्यानार्थ वरिष्ठ लेखक मधुदीप[15] के संपादन–संयोजन में लघुकथा श्रृंखला 'पड़ाव और पड़ताल' के सत्ताईस खण्डों को दिशा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कर स्तरीय लघुकथा हेतु, लघुकथा का आलोचनात्मक पक्ष एवं लघुकथा सम्बन्धी अनेक भ्रमों के निवारण हेतु ऐतिहासिक कार्य हुआ है। इसी क्रम में वरिष्ठ लेखक बलराम, कमल चोपड़ा, बलराम अग्रवाल और सुकेश साहनी, रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु, (लघुकथा.कॉम), सतीषराज पुष्करणा द्वारा भी उल्लेखनीय कार्य हुए हैं परन्तु लघुकथा की राहों में अभी भी अनेक समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं। तथापि इन सब सतही समस्याओं से विरक्ति का भाव रखकर आधुनिक लघुकथा अपने जमीनी संघर्ष द्वारा कहानी और उपन्यास की तरह अत्यधिक प्रगति कर रही है तथा अविस्मरणीय लघुकथाओं द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रही हैं। इसके साथ ही तीव्र गति से लघुकथा विशयक यह धारणा भी विलुप्त हो रही है कि लघुकथा, कहानी का सारांश अथवा सार–संक्षेप है। यह स्थापना भी वैष्विक हो रही है कि लघुकथा में शब्द सीमित होते हैं, चिन्तन–विमर्श नहीं। इसी दृष्टिगत विश्व हिन्दी सचिवालय मॉरिशस ने वर्ष 2014–15 में अन्तर्राष्ट्रीय लघुकथा प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता द्वारा विश्व हिन्दी सचिवालय मॉरिशस ने सम्पूर्ण विश्व को पाँच भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित कर वहाँ से आईं प्रविश्टियों में सर्वश्रेष्ठ कुल अट्ठारह लघुकथाओं को पुरस्कृत किया।[16] लघुकथा के विकास हेतु यह कम सुखद नहीं। आधुनिक काल में इसके विकास की वृद्धि दर उच्च एवं अबाधित है।

सन्दर्भ

1. चन्द्रदेव यादव, लोक साहित्य की भूमिका, संपादक–डॉ0 कालीचरण यादव, मड़ई 2009, पृष्ठ संख्या 21
2. 'अज्ञेय', डॉ0 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन, अनर्थ, कमल चोपड़ा, संस्करण, 2015, अयन प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 07
3. सुकेश साहनी, सुकेश साहनी की 66 लघुकथाएँ और उनकी पड़ताल, संपादक–मधुदीप, दिशा प्रकाशन, संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या 41
4. मधुदीप गुप्ता, फेसबुक, 04 जुलाई 2016
5. परसाई, हरिशंकर, साक्षात्कार, लघुकथा–विमर्ष, संस्करण, 2009, संपादक, डॉ0 रामकुमार घोटड़, पृष्ठ संख्या 27
6. सांभरिया, रत्नकुमार, प्रतिनिधि लघुकथा शतक, संस्करण, 2010, अनामय प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या 13
7. पड़ाव और पड़ताल, खण्ड–20, संपादक, मधुदीप, दिशा प्रकाशन, त्रिनगर, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 04
8. बलराम अग्रवाल, संरचना, 2008, संपादक, कमल चोपड़ा, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 24
9. सरमा, इरा वलेरिया, (Ira Valeria Sarma), The Laghukatha a historical and literary analysis of a modern hindi prose genre, संस्करण, 2012, प्रकाशन, मुंशीराम, मनोहरलाल पब्लिषर्स, नई दिल्ली, ISBN NO 978-81-215-1235-0
10. हिन्दी डिक्षनरी थिसारस, एप्लिकेशन
11. सुकेश साहनी, साक्षात्कार, लघुकथा–विमर्श, संपादक–डॉ0 रामकुमार घोटड़, संस्करण, 2009, पृष्ठ संख्या 162
12. राय, डॉ0 गोपाल, हिन्दी लघुकथा का मनोविज्ञान, डॉ0 बलराम अग्रवाल, राही प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 38
13. जैन, महावीर प्रसाद, हिन्दी लघुकथा का मनोविज्ञान, डॉ0 बलराम अग्रवाल, राही प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 33
14. राय, डॉ0 गोपाल, हिन्दी लघुकथा का मनोविज्ञान, डॉ0 बलराम अग्रवाल, राही प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या, 36, 37
15. मधुदीप, वरिष्ठ लेखक, दिशा प्रकाशन, त्रिनगर, दिल्ली, पड़ाव और पड़ताल, खण्ड 1–27
16. पड़ाव और पड़ताल, खण्ड–15, संपादन–संयोजक, मधुदीप, दिशा प्रकाशन, त्रिनगर, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 14, 179